http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 9, 37-39

Article ID:651

किसान उत्पादक संगठनों को टिकाऊ बनाने की राह: सफलता के कारक और विस्तार सेवाओं की भूमिका

रिंकू यादव[1]
मोहित कुमार खंगार[1]
मयंक शर्मा[2], मेधाश्री[2]

[1]शोधार्थी, कृषि विस्तार शिक्षा विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी उत्तर प्रदेश -284003
[2]एम.एससी. विद्यार्थी, कृषि विस्तार शिक्षा विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी उत्तर प्रदेश – 284003

*अनुरूपी लेखक

रिंकू यादव *

परिचय

छोटे किसान भारतीय कृषि की रीढ़ हैं। कृषि जनगणना 2015-16 के अनुसार देश की लगभग 86 प्रतिशत जोतें लघु एवं सीमांत श्रेणी की हैं (कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, 2019)। छोटी जोत के कारण किसान बीज, खाद और मशीनें महँगे दामों पर खरीदते हैं और उपज बेचते समय उचित मूल्य नहीं पा पाते। इसी समस्या के समाधान के रूप में किसान उत्पादक संगठन (FPO) की अवधारणा सामने आई।

FPO किसानों का ऐसा समूह है जो उत्पादक कंपनी या सहकारी समिति के रूप में पंजीकृत होता है और अपने सदस्य किसानों के हित में कार्य करता है (NABARD, 2015)। उत्पादक कंपनी की व्यवस्था की सिफ़ारिश वर्ष 2000 की विशेषज्ञ समिति ने की थी और वर्ष 2002 में कंपनी अधिनियम में संशोधन द्वारा यह लागू हुई (Government of India, 2000)। वर्ष 2020 में भारत सरकार ने 10,000 नए FPO के गठन एवं संवर्धन के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना शुरू की, जिसे लघु कृषक कृषि व्यापार संघ (Small Farmers' Agribusiness Consortium, SFAC), राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (National Bank for Agriculture and Rural Development, NABARD) और राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (National Cooperative Development Corporation, NCDC) जैसी एजेंसियाँ लागू कर रही हैं (कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, 2020)। परंतु केवल संगठन बना देना पर्याप्त नहीं है; असली चुनौती उसे लंबे समय तक सफल और आत्मनिर्भर बनाए रखना है। इस संदर्भ में कृषि विस्तार सेवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

2. अध्ययन की विधि

यह लेख वर्णनात्मक समीक्षा पर आधारित है। इसमें भारत सरकार के योजना दिशानिर्देशों (Government of India, 2013; कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, 2020), NABARD जैसी संस्थाओं के प्रकाशनों तथा FPO और कृषि विस्तार पर उपलब्ध शोध साहित्य (विशेषकर Nikam et al., 2019) का अध्ययन किया गया। प्राप्त जानकारी को सफलता के कारकों, विस्तार सेवाओं की भूमिका और प्रमुख चुनौतियों के आधार पर वर्गीकृत कर सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है।

3. परिणाम एवं चर्चा

3.1 FPO की सफलता के प्रमुख कारक

- **सदस्यों की सक्रिय भागीदारी:** जब किसान संगठन को "अपना" मानकर बैठकों, निर्णयों और व्यापार में भाग लेते हैं, तभी संगठन मज़बूत बनता है।
- **पारदर्शी एवं पेशेवर प्रबंधन:** कुशल निदेशक मंडल, प्रशिक्षित मुख्य कार्यकारी अधिकारी और स्पष्ट लेखा-जोखा सदस्यों का विश्वास बढ़ाते हैं। संगठन व नेतृत्व से जुड़ी कमज़ोरियाँ ही सबसे अधिक बाधक पाई गई हैं (Nikam et al., 2019)।
- **पूँजी एवं ऋण तक पहुँच:** पर्याप्त कार्यशील पूँजी, अनुदान और ऋण सुविधा के बिना व्यवसाय का विस्तार कठिन होता है।
- **बाज़ार संपर्क एवं मूल्य संवर्धन:** सीधे खरीदारों से जुड़ाव, ग्रेडिंग, पैकेजिंग और प्रसंस्करण से किसानों को बेहतर दाम मिलता है।
- **नीतिगत एवं संस्थागत सहयोग:** सरकारी योजनाएँ, बैंक और अनुसंधान संस्थान संगठन को आरंभिक वर्षों में स्थिरता देते हैं।
- **तकनीक का उपयोग:** मोबाइल ऐप, ऑनलाइन बाज़ार और डिजिटल लेखा प्रणाली लागत घटाती और पहुँच बढ़ाती हैं (Nikam et al., 2019)।

3.2 कृषि विस्तार सेवाओं की भूमिका

कृषि विस्तार सेवाएँ FPO के पूरे जीवन-चक्र में सहयोगी की भूमिका निभाती हैं, जैसे जागरूकता, गठन, प्रशिक्षण, तकनीकी सलाह और बाज़ार संपर्क। कृषि विज्ञान केंद्र (KVK), कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (Agricultural Technology Management Agency, ATMA), कृषि विश्वविद्यालय और क्लस्टर आधारित व्यापार संगठन (Cluster Based Business Organisation, CBBO) इस कार्य में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। शोध के अनुसार FPO स्वयं भी माँग की अभिव्यक्ति, सेवा-प्रदान, क्षमता निर्माण और वित्तपोषण जैसे विस्तार एवं सलाहकार कार्य करते हैं, परंतु इन्हें सार्वजनिक विस्तार तंत्र से अलग करके नहीं देखा जा सकता (Nikam et al., 2019)। तालिका 1 में सफलता के कारकों और उनसे जुड़ी विस्तार भूमिका को संक्षेप में दर्शाया गया है।

तालिका 1: FPO की सफलता के कारक एवं विस्तार सेवाओं की भूमिका

सफलता का कारक	विस्तार सेवाओं की भूमिका	प्रमुख माध्यम
सदस्यों की भागीदारी एवं नेतृत्व	किसानों को FPO के लाभ समझाना, समूह निर्माण तथा नेतृत्व व बैठक-संचालन का प्रशिक्षण	किसान गोष्ठी, प्रशिक्षण, प्रदर्शन
पेशेवर प्रबंधन एवं पारदर्शिता	लेखा-जोखा, रिकॉर्ड रखरखाव और कानूनी अनुपालन की जानकारी	क्लस्टर आधारित व्यापार संगठन (CBBO), कृषि विज्ञान केंद्र (KVK)
पूँजी एवं ऋण तक पहुँच	योजनाओं, अनुदान व ऋण गारंटी की जानकारी तथा व्यवसाय योजना बनाने में सहायता	NABARD, SFAC, बैंक
बाज़ार संपर्क एवं मूल्य संवर्धन	गुणवत्ता मानक, ग्रेडिंग-पैकेजिंग, ब्रांडिंग और खरीदारों से जुड़ाव	राष्ट्रीय कृषि बाज़ार (e-NAM), क्रेता-विक्रेता बैठक, प्रदर्शनी
तकनीकी ज्ञान एवं नवाचार	उन्नत किस्मों, जैविक/प्राकृतिक खेती और ड्रोन जैसी तकनीकों पर सलाह	KVK, कृषि विश्वविद्यालय, कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (ATMA)
डिजिटल सुविधा	मोबाइल ऐप, ऑनलाइन बाज़ार और सूचना सेवाओं की जानकारी	मोबाइल ऐप, व्हाट्सएप समूह, यूट्यूब

स्रोत: साहित्य समीक्षा के आधार पर लेखकों द्वारा संकलित

3.3 प्रमुख चुनौतियाँ एवं आगे की राह

समीक्षा में कुछ चुनौतियाँ बार-बार सामने आती हैं: सदस्यों की निष्क्रियता, कार्यशील पूँजी की कमी, प्रबंधन व लेखा कौशल का अभाव, बाज़ार की अनिश्चितता और बाहरी सहायता पर अत्यधिक निर्भरता (Nikam et al., 2019)। इनके समाधान के लिए विस्तार सेवाओं को निम्न दिशाओं में सुदृढ़ करना उपयोगी होगा:

- गठन के बाद भी कम से कम आरंभिक वर्षों तक निरंतर मार्गदर्शन और अनुवर्तन (फॉलो-अप)।
- KVK, ATMA और CBBO के बीच बेहतर समन्वय, ताकि प्रशिक्षण और सलाह में दोहराव न हो।
- महिला एवं युवा किसानों की नेतृत्व भूमिका को बढ़ावा; कुछ अध्ययनों में महिला FPO का सुझाव भी दिया गया है (Nikam et al., 2019)।
- व्यावसायिक योजना, लेखा-प्रबंधन और डिजिटल विपणन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण।
- जैविक, प्राकृतिक खेती और श्री अन्न (मोटे अनाज) जैसे उभरते क्षेत्रों में FPO को विशेष तकनीकी सहयोग।

निष्कर्ष

किसान उत्पादक संगठन छोटे किसानों की आय बढ़ाने और उन्हें बाज़ार से जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं, परंतु इनकी सफलता केवल संख्या बढ़ाने से नहीं, बल्कि इनके टिकाऊ संचालन से तय होती है। सदस्यों की भागीदारी, पारदर्शी प्रबंधन, पूँजी व बाज़ार तक पहुँच और तकनीकी ज्ञान इसके मूल आधार हैं। कृषि विस्तार सेवाएँ इन सभी पहलुओं को जोड़ने वाली कड़ी हैं। यदि विस्तार तंत्र FPO को निरंतर क्षमता विकास, सलाह और बाज़ार संपर्क उपलब्ध कराए, तो ये संगठन ग्रामीण समृद्धि का स्थायी आधार बन सकते हैं।

संदर्भ

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय (2020). 10,000 नए किसान उत्पादक संगठनों के गठन एवं संवर्धन की केंद्रीय क्षेत्र योजना: परिचालन दिशानिर्देश. भारत सरकार, नई दिल्ली।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग (2019). कृषि जनगणना 2015-16 (अखिल भारतीय रिपोर्ट). कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

Government of India (2000). Report of the Expert Committee on Producer Companies. Department of Company Affairs, New Delhi.

Government of India (2013). Policy and Process Guidelines for Farmer Producer Organisations. Department of Agriculture and Cooperation, Ministry of Agriculture, New Delhi.

NABARD (2015). Farmers Producer Organizations: Frequently Asked Questions. National Bank for Agriculture and Rural Development, Mumbai.

Nikam V, Singh P, Ashok A and Kumar S (2019). Farmer producer organisations: Innovative institutions for upliftment of small farmers. Indian Journal of Agricultural Sciences 89(9): 1383–92. https://doi.org/10.56093/ijas.v89i9.93451